Vol. 2025-1
January- March 2025

e News Letter
(MPBOU)

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY, BHOPAL
RAJA BHOJ MARG, KOLAR ROAD, BHOPAL (M.P.)

प्रो॰ (डॉ.) संजय तिवारी
कुलगुरु
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल की ओर से आप सभी का हार्दिक अभिनंदन। कुलगुरु के रूप में उच्च शिक्षा के प्रति विश्वविद्यालय के दायित्वों एवं इन दायित्वों के निष्पादन के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करता हूँ। एक मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्य दायित्व ऐसे विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा उपलब्ध करना है जो संसाधनों के आभाव, रोजगार की व्यस्तता अथवा किन्हीं अपरिहार्य कारणों से वंचित रह जाते हैं। अत: मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संसाधनों द्वारा सम्पूर्ण प्रदेश के सभी वर्गों तक दूरस्थ माध्यम से उच्च शिक्षा पहुंचाना और एकीकृत मानव विकास में योगदान करना है। मुझे आशा है कि भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश के सभी क्षेत्रों विशेषत: सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों एवं अनुसूचित व अनुसूचित जनजाति के छात्रों तक गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का प्रसार करने का लक्ष्य प्राप्त करते हुये, प्रदेश में उच्च शिक्षा का सकल नामांकन अनुपात (GER RATIO) बढ़ाने में अपना योगदान देगा। सभी छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामनाओं के साथ।

प्रो॰ (डॉ.) संजय तिवारी
कुलगुरु

राष्ट्रीय युवा दिवस

10/01/2025

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर, 10.01.2025 को राष्ट्रीय युवा दिवस (12.01.2025) के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम आयोजित किया, कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन सेंटर और विशेष शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर, विशेष शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों ने नाटक –"अंधविश्वास",छात्रा विधिका द्वारा एकालाप/भाषण ,नृत्य - "आत्मा का संगीत", प्रदर्शनी एवं "बाधाओं को तोड़ना: दिव्यांग उद्यमियों की सफलता की कहानियाँ" पर एक पोस्टर प्रस्तुति के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। राष्ट्रीय युवा दिवस 2025 का विषय था "उठो, जागो और अपनी शक्ति को पहचानो" विषय ने युवाओं के सशक्तिकरण पर जोर दिया और उन्हें राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि में योगदान देने के लिए अपनी क्षमता का दोहन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, के रूप में मध्य प्रदेश व्हीलचेयर क्रिकेट टीम के कप्तान और राष्ट्रीय स्तर के पैरा-तैराक श्री शैलेंद्र यादव उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी ने की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक युवा को अपनी क्षमता को पहचानने, आत्मनिर्भर बनने और सफलता की अपनी यात्रा को फिर से परिभाषित करने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय की इनक्यूबेशन प्रभारी डॉ. प्रज्ञा ओझा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री शैलेंद्र यादव ने कहा कि "विकलांगता हमारी कमजोरी नहीं है, यह सिर्फ एक चुनौती है। आज के आधुनिक युग में हर समस्या का समाधान मौजूद है और हम दिव्यांग व्यक्ति दृढ़ संकल्प और प्रयास के माध्यम से समाज में अपना स्थान बना सकते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी ने अपने संबोधन में जोर देते हुए कहा कि, स्वामी विवेकानंद जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वामी विवेकानंद ने अपनी युवावस्था में युवाओं को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करने वाले कई सत्र आयोजित किए थे। आज, हर जगह दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षा का प्रावधान है।

हमें यह समझना चाहिए कि आज के युग में कोई भी बच्चा या युवा अपने परिवार पर बोझ नहीं है। दिव्यांग युवा अपनी क्षमताओं के आधार पर रोजगार पा सकते हैं और अपने परिवार का समर्थन करते हुए एक संपूर्ण जीवन जी सकते हैं। यह बहुत गर्व की बात है कि हमारे देश के कई युवा कौशल विकास पहल से लाभान्वित हुए हैं। यही कारण है कि हमारा देश अब शिक्षित और आत्मनिर्भर देशों में गिना जाता है। कार्यक्रम का संचालन सीआईक्यूए विभाग की वरिष्ठ सलाहकार सुश्री निधि रावल गौतम ने किया। विशेष शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हेमंत केशवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी और छात्र शामिल हुए।

देवी अहिल्याबाई होल्कर की **300** वीं जन्म शताब्दी वर्ष पर कार्यक्रम का आयोजन दिनांक **17/01/2025**

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्व विद्यालय में आज देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जन्म शताब्दी के अवसर पर विश्वविद्यालय के सभागार में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" विषय पर एक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. एल. एस. निगम, पूर्व कुलगुरु श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल विश्वविद्यालय भिलाई, छत्तीसगढ़ ने अपने उदबोधन में कहा कि, देवी अहिल्याबाई ने शिव के मंदिरों के जीर्णोद्धार में बहुत बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक एकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रो. निगम ने एक भारत श्रेष्ठ भारत की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने भारत की प्राचीन परंपराओं की चर्चा करते हुए ऋग्वेद में उल्लेखित सात प्रमुख नदियों की चर्चा करते हुए कहा कि, वैदिक, आर्यों की कर्मभूमि सरस्वती, सिंधु, सतलज, व्यास, रावी, चिनाब आदि नदियों के आसपास रही है और यहीं पर आर्य संस्कृति का विस्तार हुआ। ऋग्वेद में 10 राजाओं के युद्ध का वर्णन है। ये सब आर्य जाति के ही राजा थे। उत्तर वैदिक काल में भारत हिमालय से विंध्य तक आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था। ऐसा कहा जाता है कि, अगस्त्य ऋषि ने आर्य संस्कृति का विस्तार दक्षिणापथ में किया। भारत में उत्तरापथ और दक्षिणापथ दोनों शामिल थे। बौद्ध इतिहास में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। उन्होंने कहा कि, भारत में जन और जनपद महत्वपूर्ण हैं। हमें हमारे संविधान में भी इसका उल्लेख मिलता है। जब उसकी प्रस्तावना में "हम भारत के लोग" और "भारत अर्थात इंडिया" का उल्लेख किया जाता है।

प्रो निगम ने कहा किए भारत राज्यों का संघ है। बिना राज्य के देश की कल्पना नहीं हो सकती और राज्यों की सीमा ही भारत की सीमा है। राज्यों को संसद ने बनाया है। वे देश का अभिन्न हिस्सा हैं । भारत के लोगों में विविधता है और इनमें सबसे बड़ी एकता का स्रोत हमारी नागरिकता है। हम सभी का एक संविधान है, एक झंडा है, इस दृष्टि से भारत एक राष्ट्र है। उन्होंने कहा कि, हमें भारतीय परिवेश, सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिकता और दार्शनिक विरासत को सहेज कर रखने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि, भारत में नौ दर्शन प्रचलित हैं, जिनमें से तीन नास्तिक दर्शन हैं और 6 आस्तिक दर्शन हैं राष्ट्र की अवधारणा काफी बाद की है। भारत एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा धार्मिक राष्ट्र शुरू से रहा है। उन्होंने कहा भारत में दर्शन अरण्र्यक से प्रारंभ होते हैं। उपनिषदों से ही गीता निकलती है। भारत की संस्कृति अरण्र्यक संस्कृति रही है। यही हमारी विविधता का मूल स्रोत भी है।

मुख्य अतिथि डॉ वैद्यनाथ लाभ, कुलगुरु, सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, सांची ने कहा कि, भारत एक अत्यंत प्राचीन राष्ट्र है। देश एक भौगोलिक इकाई है, जबकि राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है। समय के साथ सीमाएं बदलती रहती हैं। उन्होंने कहा कि, इतिहास के नए शोधों से पुरानी कई भ्रांतियां समाप्त हो रही हैं। नालंदा, उदंतपुरी, विक्रमशिला, सोमपुर, वल्लभी, कांचीपुरम आदि ये हमारे विद्या के केंद्र थे। उन्होंने कहा कि, शंकराचार्य ने देश के अलग-अलग हिस्सों में जाकर चार मठों की स्थापना की और यह हमारी सांस्कृतिक एकता की पहचान है। भारत में विद्वानों की बहुतायत रही है। प्रो बैद्यनाथ लाभ ने कहा, कि भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल ने 565 रियासतों का एकीकरण किया और भारत को एक सूत्र में बांधा। उन्होंने कहा कि, भारत राजनीतिक रूप से भले विभाजित रहा हो लेकिन सांस्कृतिक रूप में एक राष्ट्र हमेशा था। हमें इतिहास के अपने गौरवमय पक्ष को हमेशा याद रखना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो संजय तिवारी ने कहा कि, इतिहास वही बनाते हैं जो इतिहास को याद रखते हैं। सभ्यताएं आती जाती रहती हैं। किन्तु संस्कृति हमेशा बनी रहती है। उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर को याद करते हुए कहा कि, वह एक कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ कुशल रणनीतिकार भी थीं और वह जनता के कल्याण को हमेशा आगे रखती थीं। जनता से हमेशा सीधा संवाद करती थीं। प्रो. तिवारी ने भारतीय संस्कृति के संबंध में कहा कि, प्रकृति एवं मनुष्य में हम देवत्व का भाव देखते हैं। हमारा प्रकृति के साथ सहज जुड़ाव रहा है। कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वाशन केंद्र की उपनिदेशक डॉ. अनिता कौशल द्वारा किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय की वरिष्ठ सलाहकार सुश्री निधि रावल गौतम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. उत्तम सिंह चौहान, संकाय अध्यक्ष, कला एवं मानविकी संकाय मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। इस अवसर पर भोपाल के प्रतिष्ठित विद्वान तथा विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं शिक्षकगण भारी संख्या में उपस्थित रहे।

संस्थान नवाचार परिषद (आईआईसी) **(IIC)** त्रैमासिक द्वितीय बैठक
दिनांक: **30/01/ 2025**

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल में संस्थान नवाचार परिषद (INSTITUTION INNOVATION COUNCIL-IIC) की आंतरिक बैठक का आयोजन माननीय कुलगुरु महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 30/01/2025 अपरान्ह् 12:00 बजे बोर्ड रूम में आयोजित की गई हैं।

बैठक में इंक्यूबेशन सेंटर से संबंधित आगामी कार्यक्रम, नवाचार एवं भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की गई तथा सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार साझा किये।

भोज विश्वविद्यालय में बौद्धिक संपदा अधिकार पर व्याख्यान
दिनांक **31/01/2025**

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के सभागार में बौद्धिक संपदा अधिकार और इसका उद्यमियों तथा अन्वेषकों के लिए महत्व, विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि एवं मुख्य वक्ता डॉ. मोना पुरोहित, विधि संकाय अध्यक्ष, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल ने अपने उद्बोधन में कहा किए हम सभी को बौद्धिक संपदा कानून के बारे में जानकारी होना आवश्यक है। कोई व्यक्ति बौद्धिक संपदा का अधिकारी तभी होता है, जब वह अपनी परिकल्पना को प्रकट रूप में प्रस्तुत कर पाता है। बौद्धिक संपदा और बौद्धिक संपदा अधिकार में अंतर होता है। उन्होंने अपने व्याख्यान में बॉलर प्रोविजन की भी चर्चा की और उसे अन्वेषकों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है समझाया। डॉ. पुरोहित ने ट्रेड सीक्रेट, कॉपीराइट एक्ट के संबंध में विस्तार से चर्चा करते हुए समझाया। उन्होंने 2005 में हुए ट्रीप्स एग्रीमेंट के बारे में भी अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने, यह भी समझाया किए किस प्रकार इन्वेंशन और इनोवेशन में अंतर होता है। कॉपीराइट इंटरनेशनल होता है, जबकि पेटेंट एक भौगोलिक क्षेत्र विशेष के लिए होता है, और पेटेंट केवल 20 साल के लिए मान्य होता है। डॉ. पुरोहित ने ट्रेडमार्क एक्ट 1999 तथा डिजाइन एक्ट 2000 पर भी चर्चा करते हुए कहा किए अगर आप अच्छे उद्यमी और अन्वेषक बनना चाहते हैं, तो बौद्धिक संपदा अधिकार आपकी लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता एवं मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में प्रोफेसर ऑफ प्रेक्टिस प्रो. शैलेंद्र जायसवाल ने अन्वेषण विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, हमे यह समझना होगा की अन्वेषक क्या होता है ? उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि, किसी भी अन्वेषण के लिए तीन बातें आवश्यक हैं कि, क्या आपका अन्वेषण सभंव है ? वाछिंत है या मूल्यवान है ? उन्होंने कहा कि, उद्यमी हमेशा आपदा में अवसर ढूंढ लेते हैं। उद्यमियों को अपना नजरिया बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने मुक्त शिक्षा संस्थानों के बारे में कहा कि, हमें शिक्षा को डिटेक्टिव मेथड से इंडक्टिव मेथड की ओर ले जाना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ संजय तिवारी ने अपने विचारों को साझा करते हुए कहा किए भारत के परिप्रेक्ष्य में बौद्धिक संपदा अधिकार का बहुत महत्व है। हमें विकसित भारत बनाना है। पायरेटेड सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल से हमें बचाना होगा और इसके संबंध में हमें जागरूकता भी फैलानी होगी। उन्होंने इस संबंध में विभिन्न प्रकार के उदाहरण देते हुए कहा किए पेटेंट के मामले में भारत विश्व में छठवें नंबर पर है। हमें हर हालत में पायरेटेड सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल नहीं करना है और इसके इस्तेमाल करने वालों को भी रोकना होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत में विषय प्रवर्तन इन्क्यूबेशन सेंटर की प्रभारी डॉ. प्रज्ञा ओझा द्वारा किया गया एवं अंत में आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ऑफ प्रेक्टिस श्री बी.बी. शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय की वरिष्ठ सलाहकार सुश्री निधि रावल गौतम ने किया। इस अवसर पर भारी संख्या में विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

वसंत पंचमी के अवसर पर विश्वविद्यालय में मां सरस्वती जी की पूजा अर्चना
दिनांक- **03/02/2025**

दिनांक 03/02/2025 को वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर विश्वविद्यालय में मां सरस्वती जी की पूजा अर्चना विधिवत रूप से की गई जिसमें माननीय कुलगुरु प्रो. डॉ. संजय तिवारी जी सहित अधिक संख्या में विश्वविद्यालय के अधिकारी एवम कर्मचारीगण ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने आरती के पश्चात् प्रसाद भी ग्रहण किया और विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती जी से शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय को नई पहचान एवम ऊंचाईयों तक पहुंचाने की कामना की।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भोज विश्वविद्यालय में दिनांक- **28/02/2025**

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद विभाग द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन द्वारा किया गया। इस अवसर पर अन्य कई विज्ञान विशेषज्ञों ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम का लाइव मध्यप्रदेश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में देखा गया। मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में भी समस्त अधिकारी, शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा गया एवं मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन को एकाग्रता पूर्वक सुना गया।

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद में आयोजित इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से दो प्रतिनिधि सुश्री निधि रावल गौतम, वरिष्ठ सलाहकार, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र एवं डॉ. बी. गोपाल कृष्ण, वरिष्ठ सलाहकार, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र भी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कार्यशाला - **10-11/03/2025**

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में 10/03/2025 से 2 दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। यह कार्यशाला राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही है। विगत कई वर्षों से निरंतर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी को डॉ. सी. वी. रमन द्वारा किए गए रमन इफेक्ट की खोज के स्मरण दिवस के रूप में आयोजित किया जाता है। इसी श्रृंखला में मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में भी राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन 10 एवं 11 मार्च 2025 को किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई, जिसमें रंगोली, क्विज एवं डॉ. रमन के ऊपर शॉर्ट फिल्म का प्रदर्शन एवं अन्य गतिविधियां सम्मिलित हैं।

विश्वविद्यालय में आज कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलगुरु प्रो राजकुमार आचार्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि आजकल वैश्विक परिदृश्य जो हम देख रहे हैं,उसके मूल में विज्ञान है। विज्ञान जीवन के सभी पहलुओं को समझने का अवसर प्रदान करता है। विज्ञान का मूल भाव है, प्रयोग धर्मिता। उन्होंने कहा कि, यदि अध्ययन मानव के सुख में अनुभूति कारक है, तो कोई भी अध्ययन आनंददायक है। चेतना शब्द हिंदी का है, चेतना केवल सकारात्मक के लिए है। चेतना के लिए चिंतन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि, भारतीय चिंतन कहता है कि, हमें अपने घरों के सामान्य काम स्वयं ही करना चाहिए। विज्ञान की भौतिक प्रगति मानव के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

डॉ. आचार्य ने कहा कि, विकसित भारत बनने के लिए हमें सर्वांगीण विकास करना होगा और हमें 'उपयोग करो और फेंको' की संस्कृति को खत्म करने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा कहती है की विज्ञान जहां समाप्त होता है, अध्यात्म वहां से शुरू होता है । प्रकृति अपना कार्य अपनी गति से करती रहती है । उन्होंने कहा कि हमें भारत के चरित्र के अनुसार विज्ञान में नवाचार करना चाहिए । हमारे गुरुकुलों में विज्ञान के सारे आयामों पर पढ़ाई होती थी ।आज भारत के युवाओं के लिए एक अवसर है कि वह जीव, जगत और प्रकृति के कल्याण के लिए वैज्ञानिक नवाचार करने के लिए प्रवृत्त हों। प्रो.आचार्य ने इस संबंध में चिंता ज़ाहिर की कि विज्ञान की इतनी तरक्की के बावजूद भी कृषि के क्षेत्र में बहुत अधिक वैज्ञानिक प्रगति हमारे देश में नहीं हुई है ।

आज आवश्यकता है कि खेती के कम लागत वाले छोटे-छोटे संयंत्र की खोज की जाए चिकित्सा उपकरणों का निर्माण भारत में ही होना चाहिए। विकसित भारत में हमें पुराने भारत को पुनर्जीवित करना होगा । पुरातन विज्ञान को अधुनातन विज्ञान से जोड़कर युवाओं को विज्ञान के नए प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 10 साल बाद भारत में ड्रोन संस्कृति का विकास होगा। उन्होंने कहा कि आज मोबाइल संस्कृति ने हमारे मन को अशांत कर दिया है । इसने समाज को एकांगी बना दिया है। प्रो आचार्य ने कहा कि आने वाला समय भारत का होगा। भारत वैश्विक कल्याण के लिए नेतृत्व करने वाला देश बनेगा। प्रो.आचार्य ने कहा कि, मानवीय संवेदनाओं को सशक्त करते हुए विज्ञान का विकास और नवाचार होना चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले समय में शिक्षा के क्षेत्र में भारत अग्रणी देश होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो संजय तिवारी ने कहा कि, 2047 में विकसित भारत का सपना साकार करने में हमारे युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी । हमें विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी देश बनना है ।डॉ. तिवारी ने विवेकानंद को याद करते हुए कहा की विवेकानंद ने कहा था कि भारत को एक विकसित राष्ट्र बनना है तो उसे एक वैज्ञानिक राष्ट्र बनना होगा । इसी प्रकार सुभाष चंद्र बोस ने भी कहा था कि हमें अपनी खुद की प्रौद्योगिकी को विकसित करना होगा ।

भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम ने कहा था कि हमें अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य का निर्माण करना होगा। प्रो तिवारी ने अतीत के भारत को याद करते हुए कहा कि सन 1750 में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की अर्थव्यवस्था की 24.5 प्रतिशत थी। प्रकृति और नैतिक मूल्य दोनों के साथ ही समाज का विकास होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने 1920 और 30 के दशक को याद करते हुए कहा कि यह ऐसा दशक था जिसमें एक तरफ रामानुजन ,सी वी रमन, सत्येंद्र नाथ बोस जैसी वैज्ञानिक प्रतिभाएं भारत को उसका स्थान विश्व में दिलवा रही थी, तो दूसरी ओर राजनीतिक रूप से भारत अपने आजादी के नायकों के माध्यम से आजादी के लिए संघर्ष कर रहा था।

प्रो.तिवारी ने रमन इफेक्ट और उनके एकॉस्टिक साउंड पर किए गए कार्य और प्रयोग को समझाया। उन्होंने कहा कि, डॉ. सी.वी. रमन का रमन इफेक्ट आज 97 वर्ष के बाद भी उतना ही प्रासंगिक है। युवाओं का आवाहन करते हुए प्रोफेसर तिवारी ने कहा कि युवाओं को अपने निरीक्षण करने के कौशल को बढ़ाना होगा,तभी हम विज्ञान में प्रगति कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि भारत में शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में जब अच्छी स्थिति होगी तभी हम विकसित भारत कहलाएंगे।

NATIONAL SCIENCE DAY

NATIONAL SCIENCE DAY

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ.सुशील मंडेरिया ने कहा कि, हम रोज अपनी दिनचर्या में अपने धर्म और संस्कृति का अनुसरण करते हैं यह हमें हमारे ज्ञान परंपरा से ही प्राप्त होता है और अब हम नई शिक्षा नीति के अनुसार इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अध्ययन करने लगे हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत में विषय प्रवर्तन एवं स्वागत भाषण इंस्टीट्यूशन इन्नोवेशन काउंसिल के संयोजक डॉ. शैलेंद्र सिंह ने दिया। साथ ही मंच संचालन विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की उपनिदेशक डॉ. अनीता कौशल द्वारा किया गया। इस अवसर पर भारी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

भोपाल 11 मार्च 2025 मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में आज राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के तारतम्य में आयोजित द्वि -दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिवस विश्वविद्यालय सभागार में डॉ. सी. वी. रमन पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म (डॉक्यूमेंट्री) का प्रदर्शन किया गया। इसके पूर्व क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम के समापन सत्र में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन सेंटर की प्रभारी डॉ. प्रज्ञा ओझा द्वारा द्वि -दिवसीय कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. भरत शरण सिंह, अध्यक्ष, मध्य प्रदेश निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग, भोपाल उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि, विज्ञान में चार चीजें महत्वपूर्ण है, सर्च, रिसर्च, इन्वेंशन और इनोवेशन। डॉ. सिंह ने सी.वी. रमन द्वारा रमन प्रभाव की खोज की पृष्ठभूमि की विस्तार से चर्चा की।

डॉ. सिंह ने कहा कि, विकसित भारत में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होने वाली है। उन्होंने जेम्स वाट के भाप के इंजन तथा थॉमस अल्वा एडिसन के बल्ब के आविष्कार की विस्तार से चर्चा की। डॉ भरत शरण सिंह ने कहा कि, हमारे पुराने गन्थों में तमाम वैज्ञानिक उपलब्धियां भरी पड़ी है। उन्होंने कहा कि, हमें भारतीय ग्रंथों में पुनः शोध करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी द्वारा की गई। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, भाप के इंजन के आविष्कार ने ऊर्जा के क्षेत्र में क्रांति ला दी जिससे ब्रिटेन ने पूरी दुनिया पर राज किया। इसी प्रकार अमेरिका ने तेल के क्षेत्र में आविष्कार के दम पर पूरे विश्व पर राज किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान और नवाचार के आधार पर ही भारत को 2047 तक विकसित भारत बनाया जा सकता है। डॉ. तिवारी ने बताया कि वैज्ञानिक शोध में निरीक्षण और धैर्य का बहुत बड़ा योगदान होता है। शोध के लिए जब कोई विचार लो उस पर मनन करो। शोध में हमेशा इच्छा शक्ति, कौशल और ईमानदारी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि, रिसर्च में पैसा लगता है, और इनोवेशन के माध्यम से पैसा वापस आ जाता है। डॉ. तिवारी ने कहा भारत के डीआरडीओ और इसरो वैज्ञानिक शोध की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। भारत लगातार प्रगति कर रहा है। इस संबंध में उन्होंने कई वैज्ञानिक परियोजनाओं की भी चर्चा की। अंत में उन्होंने कहा देश तभी आगे बढ़ता है जब उसकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी उन्नत होती है।

कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिताओं में शामिल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया एवं प्रशस्ति पत्र भी भेंट किए गए। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कल्पना मिश्रा, द्वितीय स्थान पर राधा राय एवं तृतीय स्थान पर ज़ीनत परवीन रही। साथ ही क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राधा राय, द्वितीय स्थान पर सत्य विजय यादव एवं तृतीय स्थान पर रक्षित खैरवा रहे। इसके पश्चात विश्वविद्यालय के अकादमिक समन्वय विभाग के निदेशक डॉ उत्तम सिंह चौहान द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। इस दौरान कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के अंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की उपनिदेशक डॉ. अनिता कौशल द्वारा किया गया। दो दिवसीय कार्यशाला के समापन सत्र में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

भोज मुक्त विश्वविद्यालय में एक दिवसीय विचार मंथन कार्यशाला "कर्मयोगी बनें"

दिनांक **11/03/2025**

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में 11/03/2025 को विचार मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका विषय था "कर्मयोगी बनें" । यह परिचर्चा विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य आयोजित की गई। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो संजय तिवारी ने की। इसके साथ ही कार्यक्रम के संयोजक एवं विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सुशील कुमार मंडेरिया भी उपस्थित रहे। परिचर्चा में विद्यार्थियों से सीधा संवाद स्थापित किया गया। जिससे शैक्षणिक व्यवस्था में कुछ नए बदलाव किया जा सकें।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता एवं विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. उत्तम सिंह चौहान ने कहा कि, कृष्ण ने गीता में कर्म योग का दर्शन दिया है। यह एकमात्र दर्शन है, जो युद्ध स्थल पर दिया गया है। उन्होंने कहा कि, कर्म योग एक ऐसा सिद्धांत है, जिसके द्वारा जीवन के ध्येय को प्राप्त किया जा सकता है। प्रो. चौहान ने कहा कि, कई विद्वानों ने कर्म योग की व्याख्या की है। जिनमें सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि, कर्म योग एक ऐसा कवच है, जिससे हर परिस्थिति में रास्ता निकाला जा सकता है। गीता पर विवेकानंद, तिलक और महात्मा गांधी ने भी अपनी-अपनी व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं।

प्रो. चौहान ने कहा कि, ऋग्वेद में भी ब्रह्मांड की उत्पत्ति का सिद्धांत बिग बैंग थ्योरी की बात कही गई है। पाई की वैल्यू भारत में आर्यभट्ट ने बहुत पहले बताई थी। इस अवसर पर प्रो. उत्तम सिंह चौहान ने पश्चिम में रिलिजन अर्थात धर्म तथा भारतीय दृष्टिकोण में धर्म के अर्थ को स्पष्ट किया। उन्होंने भारत में प्रचलित 9 दर्शनों का संक्षिप्त में परिचय दिया, जिनमें 6 आस्तिक और तीन नास्तिक दर्शन शामिल हैं। उन्होंने बताया कि, किस प्रकार भारत से निकला हुआ भौतिकवादी चार्वाक दर्शन पश्चिम में गया और उससे वहां उपयोगिता वादी सिद्धांत प्रतिपादित हुआ। यही कारण है कि, पश्चिम में वैज्ञानिक क्रांति हुई और औद्योगिक क्रांति हुई और वहां पर भौतिकवादी प्रगति भारत की अपेक्षा अधिक हुई। उन्होंने कपिल मुनि के सांख्य दर्शन को वैज्ञानिक दर्शन बताया। डॉ. चौहान ने सांख्य दर्शन में जीवन के विकास का सिद्धांत विस्तृत रूप से समझाया । प्रो. चौहान ने प्रकृति और पुरुष के संबंध को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि, योग दर्शन में अष्टांग योग के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाया गया है। गीता यह बताती है कि मेरा धर्म क्या है।

प्रमुख वक्ता के रूप में मौजूद मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. एल. पी. झारिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि, सबसे बड़े कर्मयोगी भगवान कृष्ण है। आत्मा अजर है, अमर है और अविनाशी है। हम जो कर्म करते हैं तो उसका प्रभाव हमारी आत्मा पर भी पड़ता है। उन्होंने उपस्थित छात्रों को अच्छा कर्मयोगी बनने के गुर दिए। शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि, शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्य में संलग्न करने से विद्यालय और महाविद्यालय में शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। डॉ. झरिया ने शैक्षणिक वातावरण को शुद्ध बनाने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं, इस पर चर्चा की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. संजय तिवारी ने कहा कि, हमें अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। हमारे कर्मों का जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है। हमें अपने जीवन में अच्छे कर्मों को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि, योग का मतलब अंततः हमें अपने जीवन में मोक्ष प्राप्त करने से है। हमारे हिंदू धर्म में पुनर्जन्म की अवधारणा है। हमारे विद्वानों ने जो हमें ज्ञान दिया है, उसे हमें अपने जीवन में उतारना बहुत जरूरी है। तभी हम सफल कर्मयोगी बनेंगे। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों से कहा कि, विकसित भारत बनाने के लिए हमें अपने कार्यों और कार्य अवधि को भी बढ़ना होगा।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने कहा कि, दुनिया में सबसे बड़े कर्म योगी 'सूर्य भगवान' है। युवाओं में सबसे बड़े कर्मयोगी विवेकानंद हैं। सत्य में हरिश्चंद्र हैं। उन्होंने कहा कि, आपका जो कर्म है, उसे पूरा करना और सफलतापूर्वक पूरा करना ही कर्म योग है। उन्होंने आवाहन किया कि, हम सभी को अपने कार्यों को पूरे समर्पण के साथ करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की उपनिदेशक डॉ. अनीता कौशल द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

किन्नर समुदाय की महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 साध्वी संजना सखी से विश्वविद्यालय द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय को निशुल्कः शिक्षा प्रावधान पर चर्चा
दिनांक 12/03/2025

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में दिनांक 12/03/2025 को किन्नर समुदाय की महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 साध्वी संजना सखी विश्वविद्यालय परिसर में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की पहल पर उपस्थित हुईं। भोज विश्वविद्यालय की ओर से आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की निदेशक डॉ. विभा मिश्रा एवं उपनिदेशक डॉ. अनीता कौशल द्वारा महामंडलेश्वर संजना सखी का स्वागत शॉल, श्रीफल से किया गया। विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. एल. पी. झरिया द्वारा स्मृति चिन्ह के रूप में उन्हें तुलसी पौधा भेंट किया गया। इस अवसर में विश्वविद्यालय के सहायक कुलसचिव श्री नितिन सांगले, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की वरिष्ठ सलाकार, सूश्री निधि रावल गौतम एवं विभिन्न विभाग के निदेशक एवं अधिकारीगण मौजूद रहे।

इस अवसर पर आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की ओर से साध्वी सखी के समक्ष विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न स्नातक, स्नातकोत्तर, डिग्री, डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। डॉ. विभा मिश्रा बताया कि, विश्वविद्यालय की ओर से ट्रांसजेंडर कम्युनिटी के लिए सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश पूर्णतः निःशुल्क है। इस अवसर पर साध्वी संजना सखी ने कहा कि, वर्षों से किन्नर समुदाय समाज से तिरस्कार पाता रहा है। अगर किन्नर समुदाय को शिक्षा से समाज में सम्मान मिलता है तो ये उस समुदाय के लिए सौभाग्य की बात होगी। साध्वी संजना सखी द्वारा मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना की और आश्वासन दिया कि, किन्नर समुदाय के लोगो को मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेंगी। विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें सभी पाठ्यक्रमों की जानकारी एवं ब्रोशर भेंट किये गए।

विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस के अवसर पर भोज विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यक्रम

दिनांक-**21/03/2025**

मध्यपदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस के अवसर पर "हमारी सहायता प्रणाली में सुधार" विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. ए. के. शुक्ला, निदेशक, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान, सीहोर ने अपने उद्बोधन में कहा कि, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान सीहोर मानसिक स्वास्थ्य की बीमारियों से संबंधित है और इसमें विभिन्न प्रकार के पांच पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। उन्होंने डाउन सिंड्रोम बच्चों के विभिन्न लक्षणों को विस्तार से समझाया। डॉ. शुक्ला ने कहा कि, हमारे संस्थान में डाउन सिंड्रोम से ग्रसित बच्चों के इलाज के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस सिंड्रोम का कोई मेडिकल ट्रीटमेंट नहीं है, बल्कि इसमें पुनर्वास की प्रक्रिया ही की जाती है। हमारे यहां क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट और स्पेशल एजुकेटर होते हैं। उन्होंने समाज से आवाहन किया कि, यदि आपके पास कोई बच्चा डाउन सिंड्रोम से ग्रसित है, तो कृपया उसे हमारे संस्थान में जरूर लेकर आए उन्होंने कहा कि, डाउन सिंड्रोम से ग्रसित बच्चों के लिए होम मैनेजमेंट एक महत्वपूर्ण पहलू है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. एस. पी. गौतम, पूर्व कुलगुरु, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि, डाउन सिंड्रोम का एक बड़ा कारण बड़ी उम्र में बच्चों का पैदा करना होता है। प्रो. गौतम ने विकासवाद की अवधारणा को समझाते हुए कहा कि, पहले एक्स एक्स क्रोमोसोम वाले मेल और एक्स वाए क्रोमोसोम वाले फीमेल होते थे। किंतु ताप बढ़ने के कारण यह उल्टा हो गया और अब एक्स वाए क्रोमोसोम वाले मेल और एक्स एक्स क्रोमोसोम वाले फीमेल होते हैं। उन्होंने बच्चों में द्वितीयक लैंगिक लक्षणों का विकास क्यों और कैसे होता है? इस पर भी विस्तार से चर्चा की उन्होंने बताया कि, सिंड्रोम का अर्थ है एक कारण से कई अंगों का प्रभावित होना। उन्होंने इस संबंध में सबसे ज्यादा अभिभावकों को जागरूक करने की आवश्यकता बताई।

इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी ने विषय पर अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि, डाउन सिंड्रोम से ग्रसित बच्चों को स्नेह देने की बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि, मेडिकल के क्षेत्र में अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। डाउन सिंड्रोम से ग्रसित बच्चों को भी सम्मानपूर्वक जीवन जीने का हक है। डॉ. तिवारी ने कहा कि, हमारे देश में 2011 के जनगणना के आंकड़ों के अनुसार लगभग 2.6 प्रतिशत बच्चे दिव्यांग हैं। हमारे समाज में मानसिक स्वास्थ्य की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। हमें डाउन सिंड्रोम के बारे में जागरूकता कार्यक्रम करने की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग की छात्राओं अनुषा एवं दीप्ति ने अपनी प्रस्तुति में बताया कि, डॉ. जॉन लेंगडॉन डाउन ने 1866 में इसका पता लगाया था। मनुष्य की 26 जोड़ी क्रोमोजोम्स के 21 वें क्रोमोसोम पर 3 क्रोमोसोम एक साथ होते हैं। जिसके कारण डाउन सिंड्रोम होता है। उन्होंने बताया कि, पहले 3 महीने की गर्भावस्था में ही विभिन्न प्रकार के परीक्षणों के द्वारा इसकी पहचान की जा सकती है कि गर्भ में पल रहे बच्चे में डाउन सिंड्रोम है कि नहीं।

कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के निदेशक एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ. एल. पी. झरिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की वरिष्ठ सलाहकार, सुश्री निधि रावल गौतम द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

"जनजातीय नायकों का ऐतिहासिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान" विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन दिनांक -**24/03/2025**

मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा वनवासी कल्याण परिषद, भोपाल महानगर के संयुक्त तत्वाधान में ''जनजातीय नायकों का ऐतिहासिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान'' विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में उपस्थित वनवासी कल्याण परिषद के प्रांत महामंत्री, योगीराज परते ने कहा कि हमारे संगठन द्वारा विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इस प्रकार की संगोष्ठियों को आयोजित करने का उद्देश्य ये है कि हम हमारे विद्यार्थियों को जनजातीय समाज के उस पक्ष से परिचित कराएँ जो उन्हें मालूम नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत में 300 जनजातीयां हैं और सब की अपनी- अपनी परंपराएं और संस्कृति हैं। यह जनजातीय समाज प्रमुख तौर पर ऐसे क्षेत्रों में निवास करता है जहां घने जंगल पाए जाते हैं और खनिज भी प्रचुर मात्रा में होते हैं। योगीराज जी ने कहा कि जब-जब भारत पर बाहरी आक्रमण हुआ, तब तब जनजातीय समाज के लोगों ने हमेशा उनसे संघर्ष किया है। अंग्रेजों और मुगलों का विरोध ज्यादातर जनजातीय लोगों ने ही किया। उन्होंने इस पर खेद व्यक्त किया कि अंग्रेजों ने जनजातीय समाज को हमेशा असभ्य वर्ग के रूप में ही प्रस्तुत किया।

जनजातीय नायकों का उतना उल्लेख नहीं मिलता जितना होना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने रानी दुर्गावती का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने मध्य प्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में 12 वर्ष तक राज किया, उनकी प्रशासनिक व्यवस्था काफी सुदृढ़ थी और उन्होंने बहुत ही रणनीतिक कौशल से अकबर का सामना किया योगीराज जी ने यह भी बताया कि राणा प्रताप के साथ भीलों का किस प्रकार से साथ रहा है उन्होंने कहा कि कुंज बेल को महाराणा प्रताप ने राणा कुंज की संज्ञा दी थी और उन्हें अपना भाई समान माना था। इसी प्रकार उन्होंने झारखंड क्षेत्र से तिलका मांझी का उल्लेख किया जिन्होंने संथाल जनजाति को इकट्ठा करके अंग्रेजों से संघर्ष किया और वीरगति को प्राप्त हुए। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में भी ऐसे कई जनजातीय योद्धा हुए हैं जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम किया। इस सन्दर्भ में महाकौशल क्षेत्र में रघुनाथ राय और शंकर शाह, निमाड़ क्षेत्र में टंट्या मामा, भीमा नायक, सीताराम कंवर और रघुनाथ मंडलोई जैसे जनजातीय नायकों का उन्होंने उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि टंट्या मामा को विदेशी इतिहासकारों ने रॉबिन हुड की संज्ञा दी है। योगीराज परते ने कहा कि मणिपुर में भी जनजाति नायकों ने अंग्रेजों से लोहा लिया और उन्होंने कभी भी राष्ट्र हित से समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा कि स्त्रियों का सम्मान जितना जनजातीय समाज में है उतना किसी अन्य समाज में देखने को नहीं मिलता है। सही मायने में नारियों को समानता का अधिकार इसी जनजाति समाज ने दिया है। जनजातीय समाज जीवन मूल्यों के सबसे नजदीक रहने वाला समाज है। पूरा जनजातीय समाज प्रकृति के प्रति सचेत रहता है, इसीलिए वह वृक्ष को देवता के रूप में, नदियों के मां के रूप में और पर्वतों को भी देव के रूप में देखता है, उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज ने ही मानव मूल्यों को अपने अंदर संजो के रखा हुआ है और अतिथि देवो भव: की अवधारणा को सही मायने में यही समाज चरितार्थ करता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर संजय तिवारी ने कहा कि जल जंगल और जमीन की लड़ाई में जनजातीय समाज हमेशा आगे रहा है, जनजातीय समाज के लोग ही इस देश के असली मूल निवासी हैं। डॉ. तिवारी ने कहा कि जनजातीय समाज में नारियों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह समाज बहुत अधिक संगठित रहते हैं और इन्होनें हमेशा आत्मसम्मान ,न्याय और प्रकृति के लिए संघर्ष किया है। उन्होंने कहा कि तात्यां टोपे ने टंट्या मामा को गोरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग दी थी। जनजातीय समाज से हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भाव सीखना चाहिए। उन्होंने इस संदर्भ में कहा कि बख्तियार खिलजी की फौज जिसको उत्तर भारत में कोई नहीं रोक पाया उसे असम के जनजातीय समाज के लोगों ने संघर्ष कर खत्म कर दिया। उन्होंने कहा कि जनजाति समाज से ईमानदारी सीखने लायक है और यह समाज प्रकृति के साथ सह अस्तित्व में रहता है।

कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन करते हुए मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के निदेशक प्रोफेसर एल.पी. झरिया ने कहा कि देश में एकता अखंडता बनाए रखने के लिए देश के सभी समुदायों एवं वर्गों का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है। यह समाज आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और ऊंचे नैतिक चरित्र वाला रहा है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में 46 प्रकार की जनजातियां पाई जाती हैं। जनजातीय समाज को प्रकृति पुत्र माना जाता है। ये शंकर भगवान और देवी दुर्गा के उपासक होते हैं , यह समाज बहुत ही साहसी होता है। उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में जनजातीय समाज पर और अधिक शोध करने के लिए जनजाति शोधपीठ की स्थापना भी की गई है।

कार्यक्रम का संचालन और विषय प्रवर्तन मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सहायता विभाग के निदेशक प्रोफेसर रतन सूर्यवंशी ने किया। कार्यक्रम में इस अवसर पर वनवासी कल्याण परिषद की ओर से "जनजातीय गौरव" नामक पुस्तक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजय तिवारी को भेंट की गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थी और विश्वविद्यालय के कर्मचारी और शिक्षक उपस्थित थे।

EDITORIAL BOARD

Chief Patron

Dr. Sanjay Tiwari
Vice-Chancellor

Patron

Dr. Sushil Manderia
Registrar

Advisors

Dr. Vibha Mishra
Dr. Anita Kaushal

Editorial Members

Ms. Nidhi Rawal Gautam
Mr. Pradeep Singh Parihar

CENTRE FOR INTERNAL QUALITY ASSURANCE

Feedback and Suggestions

Kindly share your feedback and suggestions to:
info.ciqa@gmail.com